>

Title: Need to provide covered wagons for carrying coal from Mundra, Kandla and Narlakhi ports.

श्रीमती पूनम वेलजीभाई जाट (कच्छ): महोदय, आज मैं बहुत ही महत्वपूर्ण बात सदन के सामने रखना चाहती हूं। मैं कच्छ क्षेत्र से आती हूं और यहां तीन महत्वपूर्ण पोर्ट्स हैं - कंडला, नवलखी और मुंद्रा। इन पोर्ट्स पर जब भी कभी बाहर से कोयला आता है, तो यहां से ट्रेन के वैगंस द्वारा अलग-अलग क्षेत्रों में ले जाया जाता है। मुझे दुख के साथ कहना पड़ता है कि जब विदेशों से आ कर इन तीनों पोर्ट्स पर उतरता है, तो वह कोयला खुले वैगंस में ले जाया जाता है। जब वे खुले वैगंस शहरों से गुजरते हैं, तो कोयला उड़ता है, जिससे आस-पास के गांवों में प्रदूषण फैलता है। जब कभी सिग्नल पर ट्रेन रुकती है, तो कुछ असामाजिक तत्व इसमें चढ़ जाते हैं और कोयले की चोरी भी करते हैं। इस तरह से राष्ट्र को बहुत नुकसान पहुंचता है, क्योंकि जहां भी ट्रेन रुकती है, वहां से बहुत सारा कोयला चोरी हो जाता है और जो एग्रीकल्चरल लैंड है, जहां दोनों तरफ से यह ट्रेन गुजरती है, वहां भी इसके कोयले की धूल और रजकणों से एग्रीकल्चर लैंड को भी बहुत नुकसान होता है तथा एयर और सॉइल पॉल्यूशन भी होता है।

तीसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि जब भी किसी छोटे शहर या कस्बे से यह ट्रेन गुजरती है तो जब इसकी धूल उड़ती है तो वहां पर बसे हुए लोगों की आंखों में यह धूल जाती है और उनकी आंखों में तकलीफ होती है, उनकी आंखों में जलन होती है। इस कारण के वहां के लोगों में आंखों की बहुत सी बीमारियां पनप गई हैं।

मैं आपके माध्यम से रेलवे मिनिस्टर को कहना चाहती हूं कि यदि रेलवे इस तरह से कोयला एक जगह से दूसरी जगह ले जाना चाहता है तो टरपोलिन या कवर्ड वैगन्स में ले जाए। यही मेरा निवेदन है। धन्यवाद।